# इकाई 11 : प्रमुख अन्तर्राष्ट्रीय मानव प्रवास (Major International Human Migration)

**इकाई की रूपरेखा**


11.0 उद्देश्य

11.1 प्रस्तावना

11.2 प्रमुख अन्तर्राष्ट्रीय मानव प्रवास के प्रकार

- 11.2.1 यूरोपीय प्रवसन
- 11.2.2 एशियाई प्रवसन

11.3 अन्तर्राष्ट्रीय प्रवास के कारण

- 11.3.1 भौतिक
- 11.3.2 आर्थिक
- 11.3.3 सामाजिक -सांस्कृतिक
- 11.3.4 राजनीतिक

11.4 जनसंख्या का अन्तर्राष्ट्रीय प्रवसन

- 11.4.1 प्रागैतिहासिक
- 11.4.2 मध्यकालीन
- 11.4.3 आधुनिक

11.5 प्रवसन के क्षेत्रीय स्वरूप

- 11.5.1 यूरोप से उ. तथा द अमेरिका में जनप्रवाह
- 11.5.2 यूरोप से आस्ट्रेलिया एवं अफ्रीका में जनप्रवाह
- 11.5.3 एशिया में प्रवसन
- 11.5.4 अफ्रीका से स्थानान्तरण (प्रवसन)

11.6 प्रवसन की विशेषताऐं

11.7 प्रवसन के प्रभाव

- 11.7.1 क्षेत्रीय प्रभाव
- 11.7.2 जीवन शैली पर प्रभाव
- 11.7.3 जनांककीय प्रभाव
- 11.7.4 आर्थिक -सामाजिक प्रभाव
- 11.7.5 राजनीतिक व्यवस्था पर प्रभाव
- 11.7.6 आयुवर्ग पर प्रभाव

11.8 प्रवसन के मॉडल

- 11.8.1 गुरूत्व मॉडल
- 11.8.2 मध्यस्थ अवसर मॉडल




Scanned with CamScanner

11.8.3 ई एस ली का स्थानान्तरण मॉडल
11.8.4 जेलस्की का गतिशील संक्रमण मॉडल
11.9 सारांश
11.10 शब्दावली
11.11 संदर्भ ग्रंथ
11.12 बोध प्रश्नों के उत्तर
11.13 अभ्यासार्थ प्रश्न

## 11.0 उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई की अध्ययन करने के उपरान्त आप समझ सकेंगे कि : -

- प्रवास की अवधारणा और प्रवास के प्रकारों को समझना ।
- प्रवास के कारणों का ज्ञान ।
- तीन काल खण्डों - प्रागैतिहासिक, मध्य व आधुनिक कालों में विश्वव्यापी अन्तर्राष्ट्रीय प्रमुख प्रवसन ।
- मानव प्रवसन के प्रभाव ।
- प्रवसन के मॉडल का ज्ञान ।

## 11.1 प्रस्तावना (introduction)

पृथ्वी तल पर मनुष्य कभी भी पूर्णरूप से स्थिर अवस्था में नहीं रहा है । आदिकाल से ही विभिन्न प्राकृतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक तथा राजनीतिक कारणों से प्रभावित होकर मानव एक स्थान से दूसरे स्थान की ओर प्रवसन करता रहा है और यह गतिशीलता आज भी बनी हुई है इसी गतिशीलता से प्रभावित होकर फ्रेडरिक रेटजेल ने भूगोल को गतिशीलता का विज्ञान (science of movement) कहा था । अत : प्रवसन से तात्पर्य मानव समूह द्वारा कठिन परिस्थितियों वाले स्थान को त्याग कर किसी अनुकूल स्थान पर स्थायी रूप से बस जाना ही प्रवसन (migration) कहलाता है । संयुक्त राष्ट्र संघ ने भी स्थानान्तरण को स्पष्ट करते हुए लिखा है । कि ' 'प्रवसन से तात्पर्य भौगोलिक अथवा स्थानिक (spatial) प्रवासितता से है जो एक भौगोलिक इकाई से दूसरी भौगोलिक इकाई के मध्य देखी जा सकती है । जिनमें रहने का मूल स्थान और पहुँचने का स्थान दोनों एक दूसरे से भिन्न होते हैं । ऐसे प्रवसन अधिकांशत : स्थायी हो सकते हैं क्योंकि इसमे मानव का निवास स्थान स्थायी रूप से बदल जाता है ' । " प्राय : अन्तर्राष्ट्रीय प्रवसन निम्नांकित दो शब्दों से सम्बोधित किया जाता है । स्थान परिवर्तन के साथ दोनों के अर्थ बदल जाया करते हैं -

1. उत्प्रवास अथवा बहिर्गमन (emigration or out-migration)
2. आप्रवास अथवा आगमन (immigration or in-migration)

---

1. UNO, Multilingual Demographic Dictionary, 1956, P. 46.



Scanned with CamScanner

1. **उत्प्रवास** - एक महाद्वीप अथवा देश के व्यक्तियों का किसी दूसरे महाद्वीप अथवा देश में जाकर बस जाने पर वे व्यक्ति वहाँ के लिए प्रवासी कहलाऐंगे । जैसे यूरोप के लोग पलायन करके उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका, आस्ट्रेलिया आदि देशों में जाकर बस गए । ये लोग वहाँ यूरोपीय उत्प्रवासी कहलाए ।
2. **आप्रवासी** - इसके विपरीत बाहरी देशों -महाद्वीपों से जब मानव स्थानान्तरित होकर जिस देश विशेष में आकर बस जाते हैं तो वहाँ के लिए ये लोग आप्रवासी कहलाऐंगे । उदाहरणार्थ यूरोप; व महाद्वीप के लोग अमेरिका, आस्ट्रेलिया आदि देशों में आप्रवासी कहलाए । अर्थात किसी एक महाद्वीप अथवा देश से जाने वाले उत्प्रवासी (Emigrates) और अन्य देश महाद्वीप में आने वाले आप्रवासी (Immigrates) कहलाते हैं ।

## 11.2 अन्तर्राष्ट्रीय मानव प्रवसन के प्रकार (Types of international migration)

विश्व में एक महाद्वीप से दूसरे महाद्वीप में या एक देश से दूसरे देश में लोगों के होने वाले प्रवसन को अन्तर्राष्ट्रीय प्रवसन कहते हैं । प्राय : अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रवसन आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक एव धार्मिक कारणों से ही हुआ है । प्राचीन काल में जहाँ मानवीय प्रवसन के मुख्य कारणों में साम्राज्यवाद तथा श्रम हेतु बलात स्थानान्तरण प्रमुख कारण थे । वहीं वर्तमान समय में मानव उच्च शिक्षा तथा रोजगार प्राप्ति की दृष्टि से प्रवासित हो रहा है । अन्तर्राष्ट्रीय प्रवसन अधिकतर यूरोप एवं एशिया महाद्वीप के विभिन्न देशों के मध्य हुआ है । अत : अन्तर्राष्ट्रीय मानव प्रवसन को क्रमश: यूरोप एव एशियाई प्रवसन प्रकार में विभाजित किया जाता है -

### 11.2.1 यूरोपीय प्रवसन (European migration)

महाद्वीप के उत्तरी-पश्चिमी भाग के लोग अन्य देशों की ओर प्रवसन करने में अग्रणीय रहे हैं । यहाँ से लोग समुद्री मार्ग द्वारा विशेषत: 17वीं से 20वी शताब्दी तक विश्व के अनेक देशों में जाकर स्थायी रूप से बस गए । इसका प्रमुख कारण यूरोप में संसाधनों की कमी तथा जीवन -स्तर का गिरना था । अन्य ज्ञात देशों में उपजाऊ भूमि, खनिज संसाधन आदि प्रचूर मात्रा में उपलब्ध हो गए । इंग्लैण्ड, फ्रांस, जर्मनी, पुर्तगाल, स्पेन, नीदरलैण्ड आदि देशों से लोग प्रवासित होकर अफ्रीका, एशिया तथा अमरीकी देशों में जा बसे । अपनी उच्च तकनीक एवं ज्ञान से इन लोगों ने वहाँ के संसाधनों का तीव्रगति से विकास किया । यूरोप से स्थानान्तरित होकर ये लोग विश्व के दो मुख्य भागों में जाकर बसे

(अ) **उष्ण कटिबन्धीय क्षेत्र (tropical regions)** : उत्तरी अमेरिका एवं दक्षिणी अमेरिका के समुद्र तटीय उष्ण कटिबन्धीय क्षेत्र तथा एशिया के दक्षिणी-पूर्वी भाग जलवायु दृष्टि से अनुकूल रहे । यहाँ जाकर इन लोगों ने कपास, गन्ना, गर्म मसाले, तम्बाकू, कहवा, चाय आदि व्यापारिक फसलों का उत्पादन प्रारम्भ किया । खेतों पर मजदूरी के लिए ये यूरोपीय लोग अन्य देशों से बन्धुओं मजदूर बलात लाते थे ।



Scanned with CamScanner

(ब) **शीतोष्ण कटिबन्धीय क्षेत्र (temperate region)** : इस कटिबन्ध की जलवायु यूरोपीय लोगों के लिए अनुकूल थी अत: यहाँ के लोग स्थायी रूप से बसे । उत्तरी अमेरिका के संयुक्त राज्य, कनाडा, द. अफ्रीका, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड आदि शीतोष्ण कटिबन्धीय देशों में इनकी जनसंख्या अधिकतम पायी जाती है । प्रारम्भ में यूरोपीय लोगों का मुख्य उद्देश्य केवल उपनिवेश स्थापित कर उन देशों का आर्थिक शोषण करना ही था । किन्तु बाद में ये लोग उन देशों में स्थायी रूप से बसने लगे ।

### 11.2.2 एशियाई देशों से प्रवसन (Asian Migration)

18वीं शताब्दी के बाद जनाधिक्य के कारण चीन, भारत एवं जापान के लोग अपने पड़ौसी देशों में प्रवासित होकर स्थायी रूप से बसने लगे । इसका प्रमुख कारण पड़ौसी देशों में जनसंख्या का कम होना था । चीन से अधिकांश लोग मंचूरिया, कोरिया, मलेशिया, थाईलैण्ड, वियतनाम, फिलिपीन, म्यांमार आदि विरल जनसंख्या वाले देशों में जाकर बस गए । इसके अतिरिक्त चीनी लोग अमेरिका तथा अफ्रीकी देशों तक भी जा बसे ।

जापान एक छोटा देश होने के कारण प्रारम्भ से ही जनसंख्या दबाव में ही रहा अत: यहाँ से जापानी संयुक्त राज्य अमेरिका, हवाई द्वीप, कनाडा, ब्राजील, आस्ट्रेलिया, कोरिया, मंचूरिया, मलेशिया आदि देशों में प्रवसन कर गए ।

भारत से भी प्राचीन काल में धार्मिक प्रचार प्रसार के लिए कई लोगों ने प्रवसन किया । बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए म्यांमार, श्रीलंका, मलेशिया, हिन्देशिया आदि देशों में प्रवासित हुए । अंग्रेजी शासन काल में अनेक भारतीयों को अंग्रेजी कृषि बागानों में मजदूरी करवाने द. अफ्रीका, मारीशस, फिजी आदि देशों में ले गए जो बाद में स्थायी रूप से वहाँ बस गए ।

अत : कारण, दूरी और क्षेत्र के आधार पर प्रवसन को दो -दो वर्गों में रखकर देखा जा सकता है-

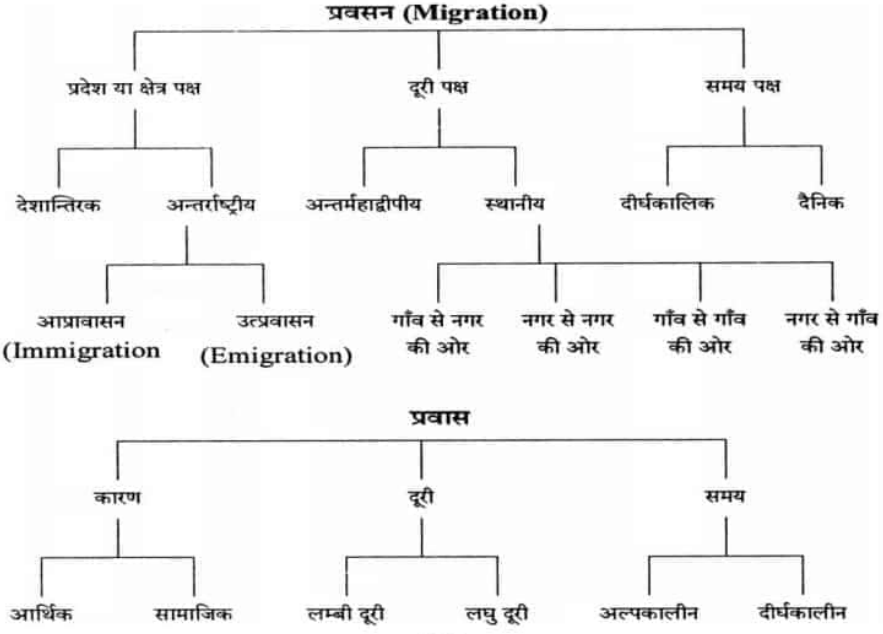




Scanned with CamScanner

## 11.3 अन्तर्राष्ट्रीय प्रवसन के कारण (Causes Of international Migration)

विश्व में एक महाद्वीप से दूसरे महाद्वीप में या एक देश से दूसरे देश में लोगो के स्थानान्तरण को अन्तर्राष्ट्रीय प्रवसन कहा जाता है । ये प्रवसन अधिकांशत : आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक अथवा धार्मिक कारणों से हैं । वर्तमान प्रवसन के पृष्ठ में रोजगार प्राप्ति तथा उच्च शैक्षणिक कारक उत्तरदायी हैं । मोटेतोर से प्रवसन के कारकों को निम्न वर्गो में विभाजित किया जा सकता है -

1. प्राकृतिक कारक : (i) जलवायु (ii) नदियां (iii) विनाशकारी शक्तियां; जैसे भूकम्प, ज्वालामुखी, भूस्खलन आदि (iv) उर्वरक मिट्टियां ।
2. आर्थिक कारक - औद्योगिकरण, खनिज संसाधनों का विकास, नवीन कृषि क्षेत्रों की उपलब्धि, कृषि तकनीकी का विकास, रोजगार अवसरों का होना, व्यापार में सुविधा, आवागमन के साधन आदि ।
3. सामाजिक कारक - सामाजिक रीतिरिवाज, धार्मिक स्वतन्त्रता ।
4. राजनीतिक कारक - राजनीतिक अस्थिरता, उपनिवेशन, सुरक्षा, युद्ध तथा उनके परिणाम, बलात बर्हिप्रवास तथा आप्रवास ।
5. जनांककी कारक - अल्प जनसंख्या, क्षेत्रिय मित्रता ।

मोटेतोर से प्रवसन के कारकों को चार वर्गो में रखा जा सकता है -

1. भौतिक कारण
2. आर्थिक कारण
3. राजनीतिक कारण
4. सामाजिक सांस्कृतिक कारण

### 11.3.1 भौतिक कारण

जलवायु परिवर्तन (अतिवृष्टि, अनावृष्टि, बाढ़ या दुर्भिक्ष) भूकम्प, ज्वालामुखी उद्‌गार, हिमाराशियों का घटना-बढना, मिट्टियों का अनउपजाऊ होना तथा समुद्र तटों का उन्मज्जन या निमज्जन होना आदि प्रतिकूल प्राकृतिक दशाऐं मनुष्य को अपने जीवन की सुरक्षा के लिए अन्य स्थानों को पलायन करने को बाध्य करती हैं ।

भौतिक या प्राकृतिक कारणों में सबसे व्यापक प्रभाव जलवायु परिवर्तन का होता है । कुमारी सैम्पुल के अनुसार जब मध्य एशिया में शुष्कता बढ़ गई तो वहां से आर्य लोग चारों दिशाओं में पलायन करने लगे । इन्हीं आर्यो की एक शाखा तुर्किस्तान और अफगानिस्तान होती हुई भारत की ओर बढ़ी । इसी प्रकार मध्य युग में भी इसी शुष्क मध्य एशिया से आक्रमणकारी (शक, हूण, तातार और मंगोल) चीन, भारत तथा यूनान में जा बसे । प्लीस्टोसीन युग के अन्तिम चरण में जब हिमालय क्षेत्र उत्तरी बाल्टिक खण्ड तक फैला तो धीरे-धीरे द. यूरोप से लोग उत्तर की ओर अग्रसर हुए ।



Scanned with CamScanner

उत्तम जलवायु के कारण ही उ. अमेरिका पश्चिमी यूरोप, भूमध्य सागरीय क्षेत्र तथा पूर्वी एशिया आदि क्षेत्रों में मानव जाकर बसे । स्फूर्तिदायक जलवायु तथा प्रयास वर्षा के कारण ही एशिया के स्टैपी प्रदेशों से तत्कालीन जातियाँ विशेषत: गोथ, हूण, वलगर और टार्टर आदि पश्चिमी यूरोपीय देशों की ओर बढीं । इसी प्रकार बाल्टिक सागर के लोग भूमध्य सागर की ओर बड़े । मंगोलिया के पर्वतीय क्षेत्रों से यांग्ट्सीक्यांग नदी बेसिन में मानव बसाव का प्रमुख कारण उपयुक्त जलवायु के साथ उपजाऊ मिट्टियों का होना ही था । इसके अतिरिक्त बाढ़ के कारण भी जनसंख्या के बड़े पैमाने पर पलायन हुआ है । भारत में कोसी नदी, चीन का हांग्हो, और कम्बोदिया की मीकांग नदियों में भंयकर बाढ़ों के साथ नदियों के मार्ग बदल जाते हैं फलस्वरूप मानव समूह अपने मूल स्थान को छोड़कर सुरक्षित क्षेत्रों की ओर प्रवसन कर जाते हैं ।
1934 के बिहार के भूकम्प के कारण हजारों लोग पलायन करके पश्चिमी बंगाल, उत्तर प्रदेश और उड़ीसा राज्यों में जाकर स्थायी रूप से बस गए । ज्वालामुखी के आकस्मिक उद्‌गार भी व्यक्तियों को अपने निवास स्थान छोड़ने को बाध्य करते हैं । जैसे सिसली, फिलीपीन और हवाई द्‌वीपों से इसी कारण हजारों लोग अन्य देशों में जाकर बस गए ।

### 11.3.2 आर्थिक कारण

आर्थिक कारणों में जनाधिक्य, खाद्‌य सामग्री का अभाव, सिंचाई की सुविधा, उपजाऊ भूमि का आकर्षण, खनिज तथा वन संसाधनों की उपलब्धता आदि मुख्य हैं । डॉ. हैडन के अनुसार ' 'जनसंख्या पलायन का मुख्य कारण किसी देश की भूमि पर जनसंख्या के अधिक भार बड़ जाने से खाद- सामग्री का अभाव होने लगता है फलस्वरूप पड़ौसी देश के धन-धान्यता का आकर्षण उस पर आक्रमण कर वहां पलायन करने की भावना उनमें जगा देता है । " अत: मानव प्रवसन में निम्न कारण उत्तरदायी होते हैं -

(i) पश्चिमी यूरोप, मध्य एशिया, पूर्वी चीन आदि देशों में जनाधिक्य के कारण वहाँ से मानव समूह दूसरे देशों को प्रवास करते रहे हैं । उदाहरणार्थ 1920 से 1940 तक जापान में जनसंख्या के अधिक सघन हो जाने से अधिकांश जापानी अच्छे आर्थिक स्त्रोतों हेतु कोरिया, मंचूरिया, वियतनाम तथा ब्राजील में जा बसे ।

(ii) जिन देशों में खनिज सम्पदा, औद्‌योगिकरण आदि की प्रधानता होती है वहां अन्य देशों के लोग पलायन करके वहाँ आने लगते हैं जैसे अमेरिकाओं, भारत, अफ्रीका तथा अन्य एशियाई देशों को उच्च आर्थिक दशाओं की उपलब्धता के कारण पलायन हुआ ।

(iii) उत्तरी अमेरिका, लेटिन अमेरिका, आस्ट्रेलिया एवं दक्षिणी अफ्रीका में विस्तृत कृषि भूमि की उपलब्धता ने यूरोप, चीन और जापान के लोगों को आकर्षित किया है । सिंचाई की उत्तम सुविधा के कारण ही अन्य भागों से जनसंख्या यांग्टिसीक्याँग और सिन्धु -गंगा नदी बेसिनों की ओर बढ़ी ।

(iv) खनिज सम्पदा के आकर्षण के कारण ही अलास्का की बर्फीली तथा कठोर जलवायु के बावजूद भी वहां सोने की खानों के समीप स्पेन वासियों की बस्तियां बस गई है । इसी प्रकार आस्ट्रेलिया के उष्ण मरूस्थल में स्थित कालगुर्ली और कूलगार्डी सोने की खानों के



Scanned with CamScanner

कारण मानव बस्तियां का प्रवास हुआ है । मध्य एशिया में तेल कूओं के पास मानव बसे हैं । यूरोप तथा संयुक्त राज्य अमरीकी पूर्वी राज्यों में कोयला पेटी में स्थित नगरों का आकर्षण मानव प्रवसन को बढ़ाता रहा है ।

(v) पहाड़ी अथवा शुष्क अन्न-उपजाऊ प्रदेश के निवासियों ने विशेषत: मंगोलिया तथा मध्य एशिया के लोगों ने वहाँ की कठोर जलवायु से निजात पाने के उद्देश्य से गंगा-यमुना, दजला- फरात अथवा यांग्ट्सी नदी घाटी क्षेत्रों पर आक्रमण किए और स्वच्छ जल भरी नदियों के सहारे बस गए । आज भी चीन, स्पेन, पुर्तगाल, हालैण्ड आदि देशों में साम्राज्य विस्तार की होड़ लगी है ।

(vi) तीर्थ स्थलों के कारण भी प्रवसन होने लगता है । प्रतिवर्ष हजारों मुस्लिम विश्व के अन्य देशों से मक्का, मदीन तथा रोमन कैथोलिक रोम और फ्रांस, इथियोपिया रच ब्रिटेन से यहूदी जेरूसलेम को जाते हैं किन्तु ऐसे स्थानान्तरण अस्थायी हुआ करते हैं ।

### 11.3.4 सामाजिक - सांस्कृतिक कारण (Social - cultural reasons)

धार्मिक एवं सामाजिक संकटों के कारण भी बड़ी मात्रा में प्रवसन होते हैं जैसे 16 वीं और 17 वीं शताब्दियों में हाग्नॉट (Hunghnat) लोगों ने फ्रांस से भागकर इंग्लैण्ड, जर्मनी, बेल्जियम और इसी प्रकार यहूदियों ने जर्मनी और मिस्त्र से भागकर फिलिस्तीन में शरण ली । 1947 में देश विभाजन के कारण पाकिस्तान से लगभग 73 लाख लोग भारत आए और 67 लाख मुस्लिम परिवार भारत से पाकिस्तान गए । धार्मिक कारणों का यह विश्व का सबसे वृहद प्रवसन था ।

सातवीं से बारहवीं शताब्दी तक ईसाई तथा इस्लाम धर्मावलम्बियों के बीच धर्म युद्ध होते रहने के कारण ईरान से लगाकर स्पेन-पूर्तगाल के बीच नियमित मानव समूहों का पलायान होता रहा है । धार्मिक भावनाओं के कारण ही स्पेन के लोग मैक्सिको में और फ्रांसिसी कनाडा में प्रवासित हुए । इसी प्रकार जर्मनी और रूस से असंख्य यहूदी अमेरिका जा बसे । कुमारी सैम्पुल के अनुसार अरब से बाहर प्रवास करने वाले इस्लाम धर्मावलम्बियों ने अपने धर्म व सभ्यता को पश्चिम में मिस्त्र और अफ्रीकी मरूस्थल तथा सूडान तक और पूर्व में ईरान, अफगानिस्तान तथा चीनी तुर्किस्तान तक और उत्तर में पेलेस्टाइन, सीरिया और इराक तक फैला दिया था ।

### 11.3.4 राजनीतिक कारण

राजनीतिक प्रवसन में मुख्यत: चार कारण प्रभावी रहते हैं -

(i) आक्रमण,

(ii) विजय प्राप्त करने की लालसा,

(iii) नए देशों में उपनिवेशों की स्थापना

(iv) बलात

आक्रमणों के कारण हुए पलायन के अनेक उदाहरण उपलब्ध हैं । मुगलों के आने से पूर्व सिकन्दर, महमूद गजनवी, मुहम्मद गौरी, बाबर, चँगेज खाँ, तैमुरलंग के भारत पर आक्रमण के



Scanned with CamScanner

समय जो लोग इनके साथ थे, वे यहीं बस गए । इसी प्रकार ब्रिटेन से जो प्रवासी उत्तरी अमेरिका, आस्ट्रेलिया तथा न्यूजीलैंड की -ओर गए उन्होंने वहां के मूल निवासियों रेड इण्डियन, आस्ट्रेलॉयड और मावरी (Maoris) लोगों को खदेड़ कर भूमि पर अपना अधिकार जमा लिया । डच लोगों ने इण्डोनेशिया में, स्पेनी एवं पुर्तगालियों ने लेटिन अमेरिका में, अंग्रेजों तथा फ्रांसिसियों ने क्रमश: भारत तथा अफीका देशों में अपने -अपने उपनिवेश स्थापित किए । तत्पश्चात प्रशासन के संचालन, व्यापार आदि के लिए ये लोग इन देशों में आकर रहने लगे । भारत के चाय, कहवा, रबड़ आदि बागानों में अपनी पूंजी लगा कर स्थायी रूप से यहीं बस गए । कुछ अंग्रेज पादरी भी धर्म प्रचार के लिए यहाँ आकर रहन लगे । मंचूरिया पर चीनी विजय के पश्चात चीनी लोग यहाँ आकर बस गए । उपनिवेश स्थापित करने के मुख्य प्रायोजन खेती तथा खनिज संसाधनों पर आधिपत्य कर अपने हित में उनका विकास करना रहा है ।

बलात प्रवसन (forced migration) संसार के अनेक देशों में देखे जा सकते हैं । भारतीयों को कुली बनाकर अंग्रेज इन्हें मॉरिशस, गायना, नेटाल, फिजी आदि उपनिवेशी देशों में ले गए । इसी प्रकार 18 वीं- 19 वीं शताब्दी में अनेक हब्शी गुलामों को संयुक्त राज्य अमेरिका में मजदूरी करने के लिए ले जाया गया । द्वितीय विश्व युद्ध काल में फ्रांस, बेल्जियम, पौलेण्ड आदि देशों से लगभग- दो करोड़ लोगों को अपने निवास स्थानों से खदेड़ा गया ।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि मानव प्रवसन प्रवृति का प्राणी है । जब किसी क्षेत्र में जनाधिक्य भार उसके आर्थिक संसाधनों की तुलना मे असंतुलित हो जाता है तो लोग अपने मूल स्थान को त्याग कर अन्यत्र प्रवास कर जाते हैं । वास्तव में मानव प्रवसन सामाजिक - सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा भौगोलिक दशाओं की ही उपज है । प्रो. ब्लाश का कथन सटीक प्रतीत होता है । उन्होंने कहा है कि " जब मक्खियों का छता पूरी तरह से भर जाता है, तो मक्खियाँ उसे छोड़ कर अन्यत्र पलायन कर जाती हैं । अत : सभी कालों में मानव प्रवास का ऐसा ही इतिहास रहा है ।

डोनाल्ड बोग के शब्दों में "Migratory movement is a response of human organisms to economic , social and demographic forces in the environment "

मौटेतोर पर प्रवसन के लिए दो घटक (Factors) उत्तरदायी हैं - (i) धक्का देने वाले अथवा प्रतिकूल घटक (push factors) और (ii) अनुकूल या आकर्षक (pull Factors) घटक ' ।



Scanned with CamScanner

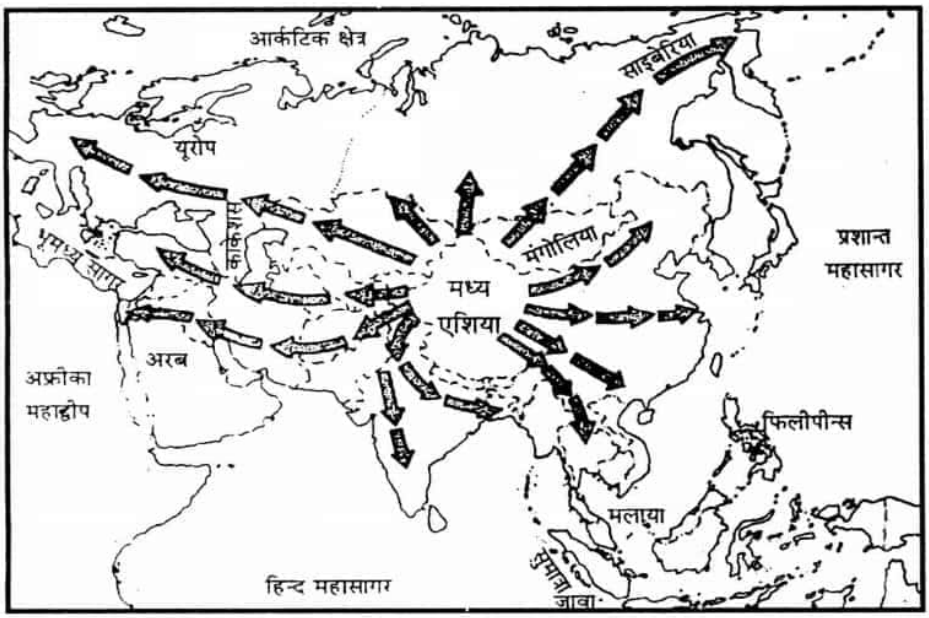


**चित्र - 11.1 : मध्य एशिया से प्रागतिहासिक प्रवास की दिशायें**

1. **प्रतिकूल घटक (Push Factors)** - में निम्न तत्व उत्तरदायी रहते हैं (i) मूल स्थान में जनसंख्या वृद्धि दर ऊँची होने से भूमि पर उसका बढ़ता हुआ भार (ii) प्राकृतिक संसाधनों का अविवेकपूर्ण दोहन या अभाव (iii) प्राकृतिक आपदाऐं (iv) सामाजिक अथवा राजनीतिक कारणों से सामाजिक संघर्ष (v) एक वर्ग का दूसरे वर्ग के प्रति उपेक्षापूर्ण व्यवहार (vi) संयुक्त परिवार प्रणाली में विघटन (vii) वर्तमान सामाजिक एवं आर्थिक ढाँचे के प्रति असन्तुष्टि । इन एकाकी या सामूहिक कारणों से क्षुब्ध होकर मानव प्रवास करता है ।
2. **अनुकूल घटक (Pull factors)** - व्यक्ति अपने जीवन को अधिक सुखी बनाने के लिए अन्य क्षेत्रों -देशों की ओर आकर्षित होता है जिनमें (i) लाभपूर्ण रोजगार के श्रेष्ठ अवसरों की उपलब्धता (ii) अधिक आय उपार्जन के लिए श्रेष्ठ अवसर की प्राप्ति (iii) विशिष्ट शिक्षा-प्रशिक्षण एवं योग्यता बढाने की सुविधाओं की उपलब्धता (iii) अनुकूल वातावरण एवं जलवायु में आवास व्यवस्था (iv) आमोद-प्रमोद के साधनों की उपलब्धता (iv) विकसित देशों का आकर्षण आदि प्रमुख घटक उत्तरदायी रहते हैं ।

## 11.4 जनसंख्या का अन्तर्राष्ट्रीय प्रवसन (International Human Migration)

कोई समूह या व्यक्ति अकारण स्थानान्तरित नहीं होता है फिर भी मानव में स्थानान्तरण की एक प्रवृति होती है जो प्रवसन के लिए प्रेरित करती है । अत : मानव प्रवसन बहुआयामी

---

2. Bogue, Donald. J., Principles of Demography, 1969, p. 753.
3. Thomilson, Ralph, Population Dynamics, 1965, P. 224.



Scanned with CamScanner

बहु उद्देशीय और बहु कालिक होता है । यही कारण है कि अन्तर्राष्ट्रीय प्रवसन को तीन काल खण्डों में विभक्त किया जा सकता है -

1. प्रागैतिहासिक प्रवसन (pre-historic Migration)
2. मध्यकालीन प्रवसन (Middle age Migration)
3. आधुनिक प्रवसन (Modern Migration)

### 11.4.1 प्रागैतिहासिक प्रवसन

विद्वानों का ऐसा विश्वास है कि आज से दस लाख वर्ष पूर्व अन्तर्राष्ट्रीय मानव प्रवसन प्रारम्भ हो गया था । मध्य एशिया में जलवायु शुष्कता के कारण जब मानव को भोजन की कठिनाई पैदा हुई तो वह नए क्षेत्रों की ओर प्रवसन होने का बाध्य हुआ । ऐसा अनुमान है कि प्रथम मानव प्रवसन ईसा पूर्व 10 लाख से 5 लाख वर्ष के मध्य हुआ जिसके फलस्वरूप अफ्रीका और दक्षिणी पूर्वी एशिया के उपोष्ण क्षेत्र आबाद हुए । दूसरा प्रवसन 5 लाख से 2 लाख ईसा पूर्व हुआ तब उत्तरी अमेरिका और आस्ट्रेलिया में मानव ने प्रवेश किया । (चित्र- 11. 1)

यह युग हिमप्रसार का युग था इसलिए केवल शीतोष्ण प्रखण्डों तक ही मानव प्रवसन हो सका । इस समय तक मानव हथियार बनाने की कला सीख चुका था अत : नए क्षेत्रों की बाधाओं को आसानी से पार कर सका । ईसा से 20 हजार वर्ष पूर्व हिम के आखरी आवरण के हट जाने से आदि मानव का मध्य अक्षांशों का क्षेत्र आकर्षक लगने लगा क्योंकि यहाँ उष्ण प्रदेशों की अपेक्षा शिकार की अधिक अच्छी सुविधा थी । यह क्रम ईसा से 5 हजार वर्ष पूर्व तक चलता रहा । कुछ विद्वान प्राचीन कालीन विश्वव्यापी मानव प्रवसन का समय ईसा से 5 हजारों से 1500 वर्ष तक मानते हैं । इस युग में नदी घाटियों में प्रवासित समूह स्थाई अर्थतन्त्र विकसित करने लगा था फलस्वरूप कृषि, पशुपालन, व्यापार और यातायात के साधनों के विकास के साथ कुछ नदी घाटी सभ्यतायें विश्व प्रसिद्ध होने लगी थीं ।

इस समय कई समुद्री यात्राओं भी की गई जिनके द्वारा न्यूज़ीलैण्ड, दक्षिणी प्रशान्त महासागरीय द्वीपों और हवाई द्वीपों पर अधिकार किया गया । इस काल में अधिकांश प्रवसन छोटे पेमाने पर हुए क्योकि यात्रा के मार्गो पर कठोर प्रतिबन्ध थे । प्राग-एतिहासिक युगों में मानव समूहों के प्रवसन जो मध्य एशिया से बाहरी भागो मे हुए थे उनमें निम्नलिखित मुख्य थे -(चित्र 11.2)

1. पूर्वी चीन को विशेषत : ह्वांग्हो नदी घाटी को । बाद में वहां से समुद्र तटीय मैदानी मार्ग से यांग्ट्जीघाटी ओर हिन्द चीन को प्रवसन ।
2. खेबर तथा अन्य दर्रों द्वारा सिंधु -गंगा घाटी और उत्तरी भारत के मैदानी भाग को ।
3. ईरान, दजला-फरात के उपजाऊ प्रदेश और मिस्त्र की नील घाटी को ।
4. भूमध्य सगर के तटीय क्षेत्र से होते हुए जिब्राल्टर के मार्ग से स्पेन तथा फ्रांस को ।
5. भूमध्य सागर के तटीय क्षेत्र से होते हुए जिब्राल्टर के मार्ग से स्पेन तथा फ्रांस को ।
6. मंगोलिया का और उसके अनादिर (Anadir) प्रायद्वीप को ।



Scanned with CamScanner

7. कुछ मानव समूह अनादिर से आगे बढकर बैरिग (Bering) के मार्ग से उत्तरी अमेरिका पहुंचा जहाँ इनकी दो शाखाऐं बन गई थी । यही लोग तत्पश्चात् उतरी अमेरिका के मूल निवासी कहलाए ।

### 11.4.2 मध्यकालीन प्रवसन

इस काल का प्रवसन प्रागैतिहासिक स्थानान्तरण से सर्वथा भिन्न था । मध्यकाल में दास प्रथा के रूप में प्रवसन हुए । नदी घाटियाँ विशेषत : दजला-फरात, नील बेसिन, गंगा-सिन्धु मैदान, हवांग्रहो घाटी तथा रूमसागर तटीय क्षेत्र आदि अपने आकर्षण से लोगों का ध्यान अपनी और खींचते रहे और इनकी सम्पत्ति को बार बार लूटते रहे । सिकन्दर से लेकर बाबर के हमले मानव प्रवसन को बाध्य करते रहे । दक्षिणी यूरोप, मध्य और दक्षिणी एशिया इस काल खण्ड में सबसे अधिक प्रवसन से प्रभावित हुए । इस काल में मुख्यत : तीन प्रकार के प्रवसन हुए -

(i) **बलात प्रवसन** : यूरोप, संयुक्त राज्य अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका के अनेक उपनिवेशों में इस प्रकार का प्रवसन हुआ । स्पेन, पुर्तगाल, फ्रांस, रोम आदि साम्राज्यवादी शक्तियों ने अनेक देशों से दास के रूप में लोगों को बलात पकड़कर अपने उपनिवेशों में काम करने के लिए बाध्य किया । इस प्रकार के बलात प्रवसन अफ्रीका, भारत आदि देशों से किया गया

(ii) **स्वैच्छिक प्रवसन** : इस युग में बादशाहों, सरदारों, सिपहसालारों की अगुआई में कुशल कलाकारों, उद्यमियों, व्यापारियों और सिपाही के रूप में व्यापक प्रवसन हुए । भारत में मुगलों की बढ़ती ताकत के कारण पश्चिमी एशिया के लोग यहाँ लाकर बसाए गए । इस काल में इस्लाम के प्रचारक अफ्रीका, यूरोप और मध्य एशिया से लेकर दक्षिणी-पूर्वी एशिया तक सक्रिय थे ।

(iii) **धर्म और युद्ध के कारण प्रवसन** : प्रथम विश्व युद्ध में लगभग 60 लाख व्यक्ति और द्वितीय विश्व युद्ध में लगभग 6 करोड़ बेघरबार हुए । धर्म संकट के समय कई लोगों को अपना घरबार छोड़ना पड़ा । इसी प्रकार रूस से 10 लाख लोग वोल्गा से सुदूर पूर्व क्षेत्रों में गए ।

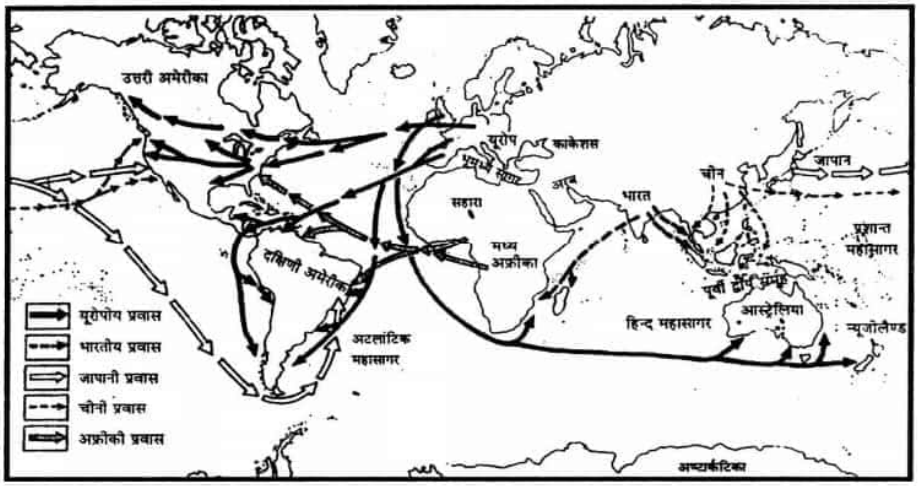


**चित्र - 11. 2 : विश्व के प्रमुख अन्तर्राष्ट्रीय प्रवास**



Scanned with CamScanner

### 11.4.3 आधुनिक जनसंख्या का प्रवसन

15वीं सदी के पश्चात यूरोपीय संस्कृति के उत्कर्ष का काल प्रारम्भ हुआ । यूरोप के अनेक तटवर्ती देशों के साहसिक नाविक एशियाई देशों से व्यापारिक सम्बन्ध बढ़ाने के लिए समुद्री मार्ग की तलाश में निकल पड़े । 1442 में कोलम्बस की अमेरिकी यात्रा ने एक नया उत्साह जगाया फलस्वरूप मैगलेन, क्यूरस, वास्कोडिगाम एवं जेम्स कुक ने यूरोप वासियों के लिए ऐसे क्षेत्र ढूंढ निकाले जहाँ नाम मात्र की जनसंख्या अपने आदिम जीवन या अविकसित संस्कृति के कारण कमजोर अवस्था में थी । बस यही से उपनिवेशवादी प्रवसन प्रारम्भ हुआ । यूरोप के लोग एक के बाद एक दूसरे देश या क्षेत्र पर कब्जा जमाने लगे । अंग्रेज, फ्रांसिसी, स्पेनी, पुर्तगाली, डच और बेल्जियम अपनी कूटनीति तथा सामरिक क्षमता के कारण पृथ्वी के विशाल भाग पर अपने उपनिवेश स्थापित करने में सफल रहे । उपनिवेशों के संसाधनों के दोहन के लिए इन्हें विश्वव्यापी प्रवसन (global migration) को प्रोत्साहित करना पड़ा । इस काल बलात तथा स्वेच्छिक दोनों प्रकार प्रवसन हुए ।1850 से 1930 के बीच केवल यूरोपीय देशों से अनुमानत: 5 करोड़ से अधिक लोगों का प्रवसन संसार के अनेक भागों में हुआ । कुछ देश तो पूर्णत : यूरोप वासियों के राष्ट्र ही बन गए जैसे दोनो अमेरिका, आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैण्ड । अनेकानेक दृष्टि से आधुनिक प्रवसन प्राचीन प्रवसन से भिन्न है ।

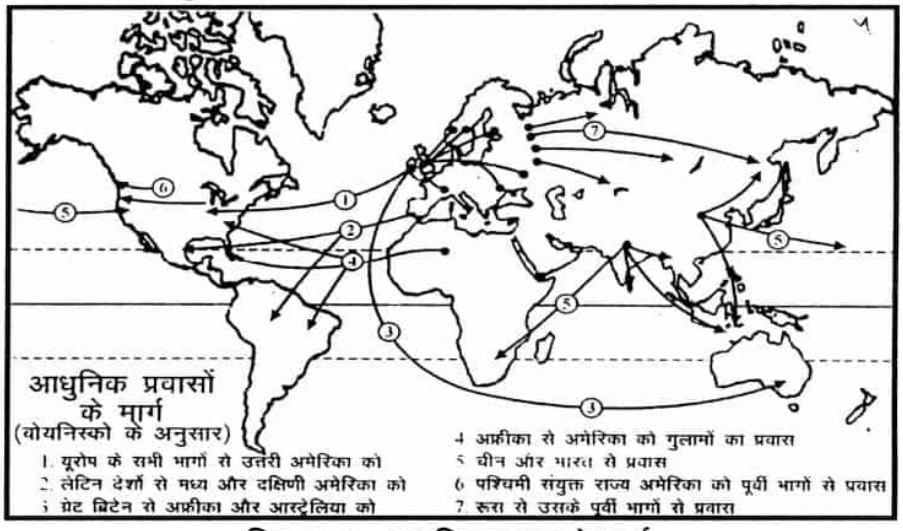


**चित्र 11.3 : आधुनिक प्रवसन के मार्ग**

## 11.5 प्रवसन के क्षेत्रीय स्वरूप (Regional Pattern of migration)

इस युग में राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय से लेकर, स्वेच्छिक, बलात, स्थाई और अस्थाई, ग्रामीण और नगरीय, मौसमी और दैनिक सभी प्रकार के स्थानान्तरण हुए हैं । इस युग में सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक घटक भी अधिक सक्रिय रहे हैं । लाखों यूरोपवासी धनवान बनने की चाह में अमेरिका, अफ्रीका, एशिया के अनुकूल अथवा प्रतिकूल दशाओं में निवासित होते रहे हैं । आस्ट्रेलिया की भौतिक कठिनाईयों को सोना के मोह में भुला दी और लोग बसने लगे । दासों का बलात प्रवसन भी इस युग की उल्लेखनीय घटना है । औद्योगिक विकास ने गाँवों को



Scanned with CamScanner

उजाड़ा और नगरों को बोझिल बना दिया । 17 वी सदी से लेकर 20 वीं सदी तक करोड़ों कीं संख्या में लोग एक महाद्वीप को छोड़ कर दूसरे महाद्वीप में प्रवासित होते रहे हैं । ऐसे क्षेत्र जहाँ बड़े पैमाने पर इस काल के हुए जनसंख्या प्रवसन को बृहत् स्थानान्तरण प्रवाह क्षेत्र कहा गया है । इन जन प्रवासों के स्थानान्तरण मैं निम्नांकित क्षेत्रीय स्वरूप विशेष महत्व रखते हैं -

1. यूरोप से उत्तरी और दक्षिणी अमेरिका में प्रवसन प्रवाह ।
2. यूरोप से अफ्रीका और आस्ट्रेलिया में प्रवसन प्रवाह ।
3. एशियाई देशों से अन्य महाद्वीपों में जन प्रवाह ।
4. अफ्रीकी देशों से अन्य महाद्वीपों में जन प्रवाह ।

### 11.5.1 यूरोपीय देशों से उत्तरी एव दक्षिणी अमेरिका में जन प्रवाह

आधुनिक समय में वृहद् अन्तर्राष्ट्रीय प्रवसन यूरोप से अमेरिका में हुए, जो यूरोपीय आधिपत्य का आकर्षण था करोड़ों लोग अटलांटिक महासागर पार कर हजारों मील दूर जाकर बस गए । यूरोप के सीमित संसाधन, बढ़ती जनसंख्या और जातीय संघर्ष के कारण यहाँ के लोग उपजाऊ भूमि, अच्छे बन्दरगाह, सोना प्राप्ति, रोजगार सम्भावनाओं और अमीर बनने की लालसा के कारण स्वेच्छा से यूरोप छोड़ अमेरिका में बसते रहे । 1846 से 1932 के मध्य लगभग 5 करोड़ यूरोपीय प्रवासी अमेरिका आए जिसमें से तीन -चौथाई लोग उत्तरी अमेरिका आए और उत्तरी अमेरिका में बसे । 1950 से 1958 के मध्य अकेले कनाडा में 15 लाख यूरोपीय आकर बसे । औसतन संयुक्त राज्य अमेरिका में प्रति वर्ष 5 लाख लोग आकर बसते रहे हैं । इस प्रकार गत 100 वर्षों में 8 करोड़ से अधिक प्रवासी यहाँ स्थाई रूप से बस गए । सर्वाधिक लोग ब्रिटेन, इटली, स्पेन, पुर्तगाल, नीदरलैण्ड, फ्रांस, जर्मनी और रूस से आए । उत्तरी अमेरिका अंग्रेजों के वर्चस्व के कारण ब्रितानी उपनिवेश में बदल गया । मध्यवर्ती ओर दक्षिणी अमेरिका की ओर लातीनी लोग अधिक प्रव्रजित हुए फलत: कालान्तर में दक्षिणी अमेरिका को लेटिन अमेरिका कहा जाने लगा । संघर्ष तथा आपसी समझौते के प्रवास तहत लातीनी (दक्षिणी यूरोपयी देश जहाँ लेटिन भाषा का प्रभाव था) दक्षिणी और मध्यवर्ती अमेरिका को अनेक देशों में बांट लिया । इस प्रकार अन्य महाद्वीपों की संस्कृतियाँ इस महाद्वीप में सिमटती गई । संसाधनों के कुशल उपयोग के लिए दास प्रथा को जन्म दिया । अफ्रीकी नीग्रो दासों की खरीद और बलात प्रवसन इस युग की घिनोनी घटना रही है । इन नीग्रो दासों के साथ पशुवत व्यवहार किया जाता था । खेतों, खानों और बागों में कार्य के लिए इन यूरोपीय अप्रवासियों ने अफ्रीका और एशिया से श्रमिकों का आयात भी किया जिसे बलात प्रवसन भी कहा जाता है । दिमागी प्रवाह (Brain Drain) के कारण कुशल और प्रवीण लोग अमेरिका में बसना गौरव पूर्ण मानने लगे । इसके लिए राजनीतिक सूझ -बूझ और अमरीकी जीवनशैली की उदारता भी आकर्षण के अन्य बिन्दु रहे हैं ।



Scanned with CamScanner

### 11.5.2 यूरोप से आस्ट्रेलिया और अफ्रीका में जन प्रवाह

उपनिवेशवाद से ग्रसित लोग बड़ी संख्या में आस्ट्रेलिया में जाकर बसने लगे । 1790 में लाखों की संख्या में ब्रितानी आस्ट्रेलिया में जाकर बसे । 1850 से 1860 के दशक में 6 लाख से अधिक यूरोपीय मात्र सोना प्राप्ति की लालसा से यहाँ आकर बस गए । 1960 में आस्ट्रेलिया की कुल 160 लाख की जनसंख्या में से 110 लाख अंग्रेज और शेष इटली, नीदरलैण्ड, ग्रीस, जर्मनी, यूगोस्लाविया, पोलैण्ड, रोमानिया, फ्रांस आदि के लोग थे । न्यूजीलैण्ड में भी यूरोप के लोग आकर बसते रहे हैं ।

यूरोप से दूसरा जन प्रवाह अफ्रीका की ओर हुआ जिसका प्रमुख कारण था मूल्यवान खनिज पदार्थ, उष्ण कटिबन्धीय कृषि उत्पाद और श्रम शक्ति का बलात उपयोग । अत : एक के बाद एक अफ्रीकी क्षेत्र उपनिवेश में बदलते गए । । दक्षिणी अफ्रीका की अनुकूल जलवायु के कारण सर्वाधिक यूरोपीय यहाँ बस गए ।

### 11.5.3 एशियाई देशों से प्रवसन

एशिया के एक वृहद् भाग पर अंग्रेजों का औपनिवेशिक शासन स्थापित हो गया था फलत : स्वेच्छा और बलात दोनों प्रकार के प्रवसन यहां भी होते रहे । श्रीलंका, दक्षिणी पूर्वी एशिया, मॉरीशस, गायना आदि देशों में कृषि, खनन-उत्खनन और पशुपालन के लिए भारतीय श्रमिकों का स्थानान्तरण हुआ । चीन से भी बड़ी संख्या में प्रवसन हुए । ऐसा अनुमान है कि करोड़ से अधिक चीनी प्रवासी पूर्वी द्वीप समूह, मलाया, कम्बोडिया, थाईलैंड, म्यांमार, दोनों अमेरिका, अफ्रीका और भारत में आकर बसे । चीन की बढ़ती जनसंख्या के कारण अन्यत्र बसने की प्रवृत्ति सहज नहीं है । स्थान की कमी के कारण जापानी भी प्रवसन के लिए प्रेरित होते रहे हैं । 1918 से 1938 के मध्य प्रति वर्ष एक लाख से अधिक जापानी अन्यत्र जाकर बसते रहे । जापानियों का प्रवसन एशियाई देशों के. अतिरिक्त दोनों अमेरिका और अफ्रीका में भी हुआ ।

एशिया से प्रवसन करने वालों में पश्चिमी एशिया के लोगों की तादाद भी कम नहीं रही । सीमित कृषि भूमि और शुष्क जलवायु के कारण बड़ी तादाद में लोग यथा - तुर्क, लेबनानी, ईरानी, इराकी, यहूदी आदि यूरोप, अमेरिका और अफ्रीकी देशों में प्रवासित होते रहे हैं । द्वितीय विश्व युद्ध के बाद कई लाख तुर्क और लेबनानी केवल पश्चिमी जर्मनी में जाकर बस गए जिन्हें वहां अतिथि श्रमिक (Guest Worker) कहा जाता है । ईसा मसीह के वंशज मध्यकाल में संघर्ष से उत्पीड़ित होकर इजराइल त्यागने को बाध्य हुए क्योंकि छठी से नवीं सदी तक इस्लाम विस्तार के लिए यहाँ सब कुछ किया गया । यहूदी विस्थापित होकर यूरोप, अमेरिका और एशिया के अन्य देशों मे बस गए । प्रथम विश्व युद्ध के बाद जब मुसलमानों की शक्ति क्षीण हुई तो धीर- धीरे अधिकांश विस्थापित यहुदी इजराइल लौटने लगे । 1925 में 45 हजार यहूदी पुन : आए और उसके बाद यह क्रम चलता रहा । 1950 में 2 लाख लोग बाहर से आकर इजराइल में बसे । भारत-पाकिस्तान विभाजन ने भी विशाल जनप्रवाह को जन्म दिया । बंगलादेश से आठ लाख विस्थापित भारत आए । इसी प्रकार श्रीलंका के विस्थापितों की बड़ी संख्या भारत में आई ।



Scanned with CamScanner

### 11.5.4 अफ्रीकी देशों से स्थानानान्तरण

धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक और जातीय कारणों से प्रवसन होता रहा है । इस्लाम के बढ़ते प्रभाव के कारण उत्तरतटीय क्षेत्र और पूर्वी भाग से अधिकांश अफ्रीकी भाग कर आन्तरिक क्षेत्रों की ओर चले गए और ऐसे रिक्त हुए क्षेत्रों में पश्चिमी एशिया से आकर लोग बस गए । 16 वीं सदी में अफ्रीकी लोगों का बलात प्रवसन कर उन्हें दासों के रूप में अमेरिका, दक्षिणी पूर्वी एशिया, पश्चिमी द्वीप समूह में बसाया गया । 16 वीं सदी के मध्य से सत्रहवीं सदी के प्रारम्भ तक अनुमानत : 50 लाख नीग्रो दास अफ्रीका में प्रवजन कर चुके थे । कैरेबियन और ब्राजील में गन्ना, तम्बाकू, कहवा और कपास की खेती के लिए 30 से 35 लाख नीग्रो लाए गए । ऐसा अनुमान है कि संयुक्त राज्य अमेरिका में इस क्रम में कम से कम 10 लाख नीग्रो अफ्रीका से लाए गए ।

**आधुनिक प्रवसन के प्रभावी कारक**

आधुनिक प्रवसन बहुप्रयोजनीय रहा है । जब प्रवसन स्वैच्छिक होता है तो उसके पृष्ठ में शिक्षा, सुरक्षा, सामाजिक प्रतिष्ठा और आर्थिक लाभ प्रमुख प्ररेक कारक होते हैं । सामूहिक प्रवसन के व्यापक प्रभाव दोनों छोरों पर पड़ता है । ऐसी ही स्थिति में यूरोप खाली हुआ और अमेरिका तथा आस्ट्रेलिया आबाद हुए । बलात प्रवसन के कई रूप विकसित होते हैं उदाहरणार्थ पलायन (Fight), विस्थापन (Displacement), कानूनी प्रवसन जैसे कालापानी सजा के लिए अण्डमान में प्रवसन अथवा श्रमिक तथा दास के रूप में एक राष्ट्र से दूसरे राष्ट्र में स्थानान्तरण विशेष उल्लेखनीय है । ब्रिटिश सरकार द्वारा पहले आस्ट्रेलिया में कैदी लोगों को स्थानान्तरित किया गया और बाद में सामान्य जन प्रवाह उसकी ओर हो गया । ऐसी ही दशा अण्डमान द्वीप समूहों में विकसित हुई ।

## 11.6 प्रवसन की विशेषताऐं

यूरोपीय औपनिवेशिक युग में नए क्षेत्रों को अपने अधिकार में रखने के लिए विश्वास पूर्ण कर्मचारियों, सैनिकों और प्रशासनिक अधिकारियों की आवश्यकता थी । फलस्वरूप यूरोप से स्वतंत्र प्रवसन नए क्षेत्रों की ओर हुए । खेत, कारखानों और दफ्तरों में काम करने के लिए बलात प्रवसन उन क्षेत्रों से किए गए जहां जनसंख्या अधिक थी अथवा देश पिछड़े थे जैसे अफ्रीकी और एशियाई देश । इस युग का स्थानान्तरण इतना व्यापक था कि उसे प्रवसन प्रवाह (Migration Fiow) नाम दिया गया । इसके तहत लाखों लोग एक ही दिशा में प्रवासित होते रहे और नए-नए क्षेत्र आबाद होते रहे । अस्तु इस अभिनव प्रवसन की आठ विशेषताऐं उल्लेखनीय हैं -

1. अटलांटिक अपतटीय प्रवसन यूरोप से अमेरिका में हुए प्रवसन ने एक अनूठा स्वरूप लिया । यूरोप से अमेरिकी भूमि की ओर जो प्रवसन हुए वे स्थायी तथा स्वेच्छिक थे । इस विशाल जन-प्रवसन से नये देशों का उदय हुआ (संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा, मैक्सिको तथा लातिनी देश), नई संस्कृति अस्तित्व में आई और विश्व शक्ति का ध्रुवीकरण यूरोप से अमेरिका में चला गया ।



Scanned with CamScanner

2. दक्षिणी यूरोप से दक्षिणी और मध्यवर्ती अमेरिका में प्रवसन उतना प्रबल नहीं था, फिर भी इसका प्रभाव व्यापक रूप से पड़ा । अनेक देशों से प्रवासित लोग यहाँ भी वर्गों में बंट गए इससे मध्यवर्ती तथा दक्षिणी अमेरिका अनेक राजनीतिक टुकड़ों में बांटा गया और इस क्षेत्र की शक्ति बिखर गई ।
3. ब्रिटेन अपनी सामरिक शक्ति, कूटनीति और अवसरवादी प्रवृति के कारण जहाँ लाखों लोगों को अपने देश से बाहर बसाता रहा वहीं लाखों लोगों को एक राष्ट्र से दूसरे राष्ट्र में प्रव्रजित भी करता रहा है क्योंकि उसका साम्राज्य इतना विशाल हो गया था, जहाँ कभी सूर्य अस्त नहीं होता था । अत: अंग्रेजी संस्कृति के प्रसार में ब्रितानी प्रवसन आधुनिक इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना है ।
4. भारत से भी ब्रितानी उपनिवेशों में पर्याप्त मात्रा में प्रवसन हुए फलतः: मॉरीशस, गायना, श्रीलंका, दक्षिणी-पूर्वी एशिया, अमेरिका, ब्रिटेन, हांगकांग आदि देशों में भारतीयों की बस्तियां पनप गई । स्वतंत्रता के बाद बड़ी मात्रा में लोग पश्चिमी एशिया की ओर अस्थायी रूप से प्रवासित हुए । पाकिस्तान और बंगलादेश आने वाले विस्थापितों के कारण 1951 के बाद भारत में जनसंख्या विस्फोट की बात कही जाने लगी ।
5. चीन से दक्षिणी पूर्वी, दक्षिणी एशिया और अन्य महाद्वीपों में प्रवसन सहज तथा स्वैच्छिक था । चीन से प्रवसन सुविधा की तलाश में हुआ किन्तु अपनी संस्कृति के प्रति हमेशा जागरूक बने रहे ।
6. आस्ट्रेलिया को अंग्रेजों ने पहले काला पानी क्षेत्र बनाया जहाँ उपनिवेशिक देशों से कैदियों को नजर बन्द रखा जाता था किन्तु सोना प्राप्त के बाद स्थिति बदल गई और आन्तरिक क्षेत्र आबाद होने लगा ।

तालिका- 11. 1 से स्पष्ट है कि विश्व के अनेक देशों में आज भी प्रवसन ब्रून्स महत्वपूर्ण बना हुआ है । आज घटता ससांधन, बढ़ती जनसंख्या, जातीय विवाद, धार्मिक कट्टरता और क्षेत्रवाद के कारण जनसंख्या प्रव्रजन के समक्ष कई चुनौतियां हैं और प्रवसन पर कानूनी रोक भी है फिर भी इसे रोकना सम्भव नहीं है क्योंकि कई क्षेत्रों में प्रवासित लोगों की अपनी आवश्यकता है । जैसे आस्ट्रेलिया आव्रजन को प्रोत्साहित करता है लेकिन यूरोप के लोगों को ही बसाना चाहता है।

तालिका यह भी दर्शाती है कि यूरोप के लोग अब भी सबसे अधिक प्रवसन करते हैं । आव्रजकों को आकर्षित करने में संयुक्त राज्य अमेरिका विश्व का अग्रणी देश है जहां प्रतिवर्ष औसतन तीन लाख से अधिक लोग विश्व के विभिन्न देशों से आते हैं । उदारवादी नीति और आर्थिक सुविधा के कारण सबसे अधिक मेधावी लोगों का प्रवाह संयुक्त राज्य अमेरिका की ओर होता है । ऐसे मेधावी लोगों में एक-तिहाई लोग यूरोप से प्रति वर्ष आते हैं । विश्व बैंक की रिपोर्ट के अनुसार 1958 में लगभग 1250 लाख लोग अपने गृह क्षेत्र को त्यागर कर अन्य क्षेत्रों मे निवासित हुए थे । गृह क्षेत्र को त्यागने वालो मे सर्वाधिक विकासशील देशों के लोग थे । 1985 में अरब देशों की 34 प्रतिशत जनसंख्या विदेशी लोगों की थी जबकि 26 प्रतिशत आस्ट्रेलियाई



Scanned with CamScanner

आव्रजक वर्ग के थे । औद्योगिक देशों में आज भी कुशल श्रमिकों आव्रजन बना हुआ है अत: जनसंख्या का प्रवसन एक प्रक्रिया बन चुकी हैं ।

तालिका-11 .1 : विश्व के देशों मे औसत वार्षिक आव्रजन-प्रव्रजन

| आव्रजन क्षेत्र, | संख्या | प्रवजन क्षेत्र, | संख्या | | |
|---|---|---|---|---|---|
| आस्ट्रेलिया | - अफ्रीका | - उत्तरी अमेरिका | - दक्षिणी अमेरिका | - एशिया | - यूरोप |
| 147507 | - 3082 | - 4460 | - - | - 5081 | -131680 |
| कनाडा | | | | | |
| 145758 | - 3203 | - 15329 | - 2471 | - 11677 | - 07459 |
| ब्राजील | | | | | |
| 23859 | - - | - 971 | - - | - 2671 | -116829 |
| नीदरलैण्ड | | | | | |
| 76718 | - 7425 | - 7914 | - 7169 | - 11621 | -39749 |
| ब्रिटेन | | | | | |
| 137925 | - 4853 | - 21942 | - 16722 | - 29421 | -55989 |
| दक्षिणी अफ्रीका | | | | | |
| 33326 | - 10763 | - 1888 | - 788 | - 327 | -25166 |
| संयुक्त राज्य अमेरिका | | | | | |
| 321040 | - 3137 | - 83536 | - 25830 | - 39678 | -123661 |

*विश्व बैंक रिपोर्ट पर आधारित

अत : स्पष्ट है कि प्रवसन मानव की सामान्य आर्थिक सामाजिक प्रकिया है । वह अपनी सुख - सुविधा की तलाश में एक राष्ट्र से दूसरे राष्ट्र या एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में आता-जाता रहा है । वर्तमान में अनेक राजनीतिक, धार्मिक -सामाजिक तथा जातीय कारणों से जनसंख्या के प्रवसन में कुछ रूकावटें पैदा की जा रही है जिसके कारण 'वसुदेव कुटुम्बकम ' की भावना कमजोर होती जा रही है इसलिए भविष्य में जनसंख्या को लेकर अनेक भंयकर समस्याऐं खड़ी हो सकती हैं जिसके लिए विश्व को गम्भीर होना आवश्यक है ।

## 11.7 प्रवसन के प्रभाव (impacts of migration)

जनसंख्या के प्रवसन से जनसंख्या सम्बन्धी अनेक समस्याओं का समाधान होता है और विश्व बन्धुत्व की भावना को भी बल मिलता है किन्तु दूसरी ओर सघन बसे देशों से होने वाला उत्प्रवास उसे राहत देता है जबकि विश्व जनसंख्या वाले देशों में श्रमिकों की समस्या का समाधान भी होता है । अप्रवासियों के कारण एक नई संस्कृति के सम्पर्क होने से जीवन का स्व बदलता है । यहूदी व्यापारियों ने अनेक देशों में व्यापारिक चेतना जगाई । अन्तर्राष्ट्री प्रवसन से बेरोजगारी, प्रतिव्यक्ति उत्पादकता, प्रवास जीवनस्तर आदि प्रभावित होते हैं । जैसे संयुक्त राज्य में नीग्रो समस्या और श्रीलंका में तमिल समस्या ने जीवन स्तर को प्रभावित किया है । अत : प्रवसन के प्रभावों को निम्न समूहों में रखा जा सकता है ।



Scanned with CamScanner

### 11.7.1 क्षेत्रीय प्रभाव

पूर्व ऐतिहासिक काल में विश्वव्यापी मानव प्रवसन से विविध प्रजातियों का उदय हुआ और विभिन्न क्षेत्र आबाद हुए । मध्यकाल में भी युद्ध व धर्म के नाम पर वृहद प्रवसन से नए-नए क्षेत्रों में मानव जा बसा । आधुनिक काल में यूरोपवासियों के विश्वस्तरीय प्रवसन से विश्व का स्वरूप ही बदल गया । अमेरिका, आस्ट्रेलिया तथा अनेक वीरान द्वीप आबाद हुए तथा यूरोपीय संस्कृति विश्वव्यापी प्रभाव बनाने में सख्त हुई । राष्ट्रीय स्तर पर प्रवसन से जनसंख्या संतुलन के साथ संसाधन दोहन की प्रक्रिया में विस्तार हुआ । भारत-पाकिस्तान विभाजन से विस्थापितों की बड़ी जमात ने आर्थिक -सामाजिक परिदृश्य को नया रूप दिया । भारत-पाकिस्तान विभाजन से विस्थापितों की बड़ी जमात ने आर्थिक- सामाजिक जीवन को बदला । इसी प्रकार राष्ट्रीय प्रवसन से राष्ट्रीय समृद्धि के नए परिवर्तन बने जैसे सोवियत रूस एवं संयुक्त राज्य अमेरिका ।

### 11.7.2 जीवन शैली पर प्रभाव

प्रवासित मानव समुदाय अपनी जीवनशैली का प्रभाव दूसरे वर्ग पर डालने का प्रयास करता है जिससे जीवन में गुणात्मक परिवर्तन आता है । यूरोपीय लोगों की जीवनशैली के प्रभाव औपनिवेशिक देशों के लोगों पर स्पष्ट दृष्टिगोचर होते हैं । शिक्षा के प्रचार-प्रसार से अफ्रीका जैसे निरक्षर समाज में एक से एक मेघावी राजनेताओं का उदय हुआ । किन्तु इस प्रभाव का दुखद अन्त भी होता है । शक्तिशाली बाहरी संस्कृति नैसर्गिक जीवनशैली को मिटा देती है । अफ्रीका और एशिया की प्राचीन जीवनशैली की उपेक्षा और उपभोक्तावादी पश्चिमी संस्कृति का प्रसार इसका स्पष्ट प्रमाण है । इसे दूसरे शब्दों में सांस्कृतिक आक्रमण भी कहा जा सकता है ।

### 11.7.3 जनांकिकी प्रभाव

एक देश की जनसंख्या की कुछ नैसर्गिक विशेषताऐं होती हैं जिनसे जनसंख्या वृद्धि और वितरण निर्धारित होते है । जनसंख्या वितरण को संतुलित करने में क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रवसन सहायक बन जाता है जैसे चीन, यूरोप और एशिया की सघन बसी जनसंख्या के प्रवसन से इन देशों को कुछ राहत मिली, वहीं दूसरी और आव्रजकों के कारण अनेक देशों की जनसंख्या में अप्रत्याशित वृद्धि हुई । वृद्धि को नियन्त्रित करने में प्रव्रजन की अहम भूमिका रही है । केवल पुरूषों के प्रव्रजन से लिंग अनुपात असंतुलित होता है जिससे अनेक सामाजिक परिवर्तन आ जाते हैं जैसे अमेरिका में इसी कारण वर्ण संकट लोगों की संख्या बढ़ गई । आव्रजकों से अनेक प्रजातियों का विनाश भी होता है । यूरोप के लोगों ने रेड इण्डियन, इजतेक और माया संस्कृति के लोगों का बड़े पैमाने पर विनाश किया । आव्रजन से जनसंख्या बहुजातीय, बहुधर्मी और बहुभाषी हो जाती है । उत्तरी अमेरिका इसका प्रमाण है ।

### 11.7.4 आर्थिक -सामाजिक जीवन पर प्रभाव

विश्व की अर्थव्यवस्था में जो गुणात्मक परिवर्तन आया है उसके लिए प्रवसन काफी हद तक जिम्मेदार है । अमेरिका में बसे यूरोपवासियों ने संसाधन विकास की नई विधियां विकसित कीं । व्यवसायिक पशुपालन, व्यवसायिक कृषि, उद्योग, व्यापार, खनन उद्योग और परिवहन में



Scanned with CamScanner

क्रान्तीकारी परिवर्तन के लिए अप्रवासियों की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण रही है । श्रमिकों की कमी के कारण कृषि, उद्योग और यातायात में यान्त्रीकरण इसके प्रमाण हैं जो अमेरिका से अन्य महाद्वीपों में प्रचारित हुआ । गन्ना, चाय, कहवा, रबड़, तम्बाकू, कपास, अन्न आदि की कृषि मूल स्थान से अन्य क्षेत्रों में भी होने लगी है । ऐसे ही विशिष्ट फसलों की कृषि के लिए भारतीय मॉरीशस और फिजी स्थानान्तरित हुए । आज इन द्वीपों की संस्कृति भारतीय हो गई है । प्रवसन से नवाचार विस्तार को बल मिलता है । यूरोप से अमेरिका गए लोगों ने आदिवासियों पर नियन्त्रण किया । भारत के सामाजिक संगठन को विदेशी आव्रजकों ने बहुत प्रभावित किया । प्रवसन से मद्भावना और सहयोग के साथ-साथ कुटिलता और स्वार्थपरता भी पनपती है । यूरोपीयों की कुटिलता और स्वार्थ के कारण भारत को गुलामी सहनी पड़ी । प्रवसन ने क्षेत्रीयता तथा जातीय विभेद को भी पनापाया । संयुक्त राज्य में नीग्रो समस्या, पाकिस्तान में भारतीय मुसलमानों को उत्पीड़न सहना इसके ज्वलंत उदाहरण हैं ।

### 11.7.5 राजनीतिक व्यवस्था पर प्रभाव

यूरोपवासियों के लिए प्रवसन राजनीतिक लाभ के रूप में ब्रून्स प्रकार का वरदान ही मिला । राजनीतिक संरक्षण में पहले नाविकों और व्यापारियों को प्रवजन के लिए उत्साहित किया गया और बाद में धीरे धारी लाभदायक क्षेत्रों पर कब्जा जमा लिया । ब्रिटेन ने विशाल औपनिवेशक साम्राज्य स्थापित किया । प्रवसन से यूरोपीय देशों में जहां आन्तरिक संघर्ष घटा वहीं उपनिवेशों को लेकर संघर्ष बढ़ता गया । दो विश्व युद्ध झेलने के बाद बदलाव आया और उपनिवेशों को स्वतन्त्रता मिली किन्तु राजनीतिक कुटिलता के कारण स्वतन्त्र देशों में राजनीतिक स्थिति तनाव पूर्ण हो गई । भारत और पाकिस्तान, श्रीलंका और अनेक अफ्रीकी देश आज भी इसका दुख : भोग रहे हैं । अत: जनसंख्या प्रवसन का प्रभाव कहीं सुखद तो कहीं दुखद भी बना हुआ है ।

### 11.7.6 जनसंख्या के आयु-वर्ग पर प्रभाव

जिन देशों से प्रवसन होता है उनमें नौजवानों की संख्या अधिक होती है फलस्वरूप बच्चे और बूढ़े उसी प्रदेश में रह जाते हैं । इस प्रकार प्रवासित क्षेत्रों में काम करने वाले वर्ग में कमी आ जाती है । इसके विपरीत नए आबाद देशों में जहाँ जवानों का आवास होता है वहां आर्थिक विकास तीव्र गति से होने लगता है । अमेरिका, दक्षिणी अफ्रीका, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड आदि की तीव्र उन्नति होने का यही मुख्य कारण है ।

---

4. James, P.E., All Possible World, the Odyssey Press, Indiainpolis, 1972, P. 517...



Scanned with CamScanner

## 11.8 प्रवास के मॉडल

विभिन्न जनांककी विद्वानों ने अपने अनुसन्धानों के आधार पर प्रवास मॉडलों का प्रतिपादन किया है । प्रवसन से सम्बन्धित ये मॉडल निम्नलिखित है -

### 11.8.1 गुरूत्व मॉडल (Gravity Model)

स्तुयर्ट ने सर्वप्रथम जनसंख्या के स्थानान्तरण को न्यूटन के गुरूत्वाकर्षण नियम के साथ समरूपता सम्बन्ध (Isomorphic Relation) स्थापित किया ।

जो बाद में "ग्रेविटी मॉडल " के नाम से जाना गया । इसके अनुसार दो नगरीय केन्द्रों के बीच प्रवास उनके जनसंख्या का प्रतिफल होता है और उनके बीच की दूरी के विलोम अनुपात में होता है । इस मॉडल को निम्न ब्रून्स से प्रकट किया-

$$Mij = \frac{p_i p_j}{dij}$$

अर्थात : Mij = i और j स्थानों के बीच कुल प्रवास

Pi = i स्थान की जनसंख्या

Pj = j स्थान की जनसंख्या

Dij = i और j स्थानों की दूरी

गुरूत्व मॉडल में यह विश्वास किया जाता है कि किसी क्षेत्र के प्रवास की आकर्षण शक्ति उसके आर्थिक आधार के आकार (size) पर निर्भर करती है । दूरी वर्ग को विभाजक माना जाता है । अर्थात ज्यों-ज्यों दूरी बढती है, प्रवासियों की संख्या कम होती है । हैरिस ने इस मॉडल की आलोचना इस आधार पर की कि प्रवास सामाजिक निर्णयों से पृथक नहीं है । पीटरसन का मत है कि इस मॉडल में प्रवासियों के लिंग तथा आयु प्रोफाइल की अवहेलना होती है । टेलर का कहना है कि गुरुत्व मॉडल एक अपरिष्कृत भौतिक समरूपता है जिसका सामाजिक विज्ञान में कोई सैद्धान्तिक आधार नहीं है । (टेलर 1977 पृ. 305)

### 11.8.2 मध्यस्थ अवसर मॉडल (intervene Oppurtunity Model)

1940 में स्ट्रोफर ने मध्यस्थ अवसर मॉडल प्रस्तुत किया उनके अनुसार प्रवास निर्धारण में रेखीय दूरी का महत्व क्षेत्र की विशेषताओं की तुलना में कम होता है । इस कारण ज्यामितीय दूरी के स्थान पर सामाजिक- आर्थिक दूरी पर ध्यान देना चाहिए । इस प्रकार यथावत दूरी का उतना महत्व नहीं होता जितना मध्यस्थ सुविधाओं का होता हैं ।

इस मॉडल के अनुसार गन्तव्य स्थान पर जाते हुए व्यक्तियों की संख्या उस स्थान में उपलब्ध अवसरों के अनुपात में होगी किन्तु यह मध्यस्थ अवसरों की संख्या के विलोम अनुपात में होगी । मध्यस्थ अवसरों का तात्पर्य दो स्थानों के मध्य स्थित बिन्दुओं पर उपलब्ध अवसर से है । (स्ट्रोफ्त, पृ. 946) यह मॉडल निम्न रू द्वारा प्रकट किया जा सकता है -

$$y = k\frac{\Delta x}{x}$$



Scanned with CamScanner

यहाँ Y = एक स्थान से केन्द्रीय स्थान की ओर जाने वाले प्रवासियों की संख्या

$\Delta x$ = इस कटिबन्ध में स्थित अवसरों की मात्रा

X = प्रारम्भिक स्थल से लक्ष्य स्थल के बीच उपलब्ध अवसर

K = अचल समानुपाती' = $\frac{\sum O}{\frac{\sum \Delta x}{x}}$

O = प्रवासियों की वास्तविक संख्या

वास्तविक अवसरों में रोजगार अवसर, वातावरण, आवास आदि को समाहित किया जाता है जिनके कारण प्रवासियों के आकर्षण में बढ़ोतरी होती है ।

### 11.8.3 ली का स्थानान्तरण मॉडल

ई .एस .ली ने प्रवास प्रक्रिया को चार वर्गों में विभक्त किया -

1. उद्‌गम स्थल से सम्बन्धित पटक,
2. गंतव्य स्थल से सम्बन्धित घटक,
3. मध्यस्थ बाधाऐं
4. वैयक्तिक कारक ।

ली के अनुसार उद्‌गम तथा गन्तव्य स्थल दोनों स्थानों पर धनात्मक (आकृष्ट करने वाले) घटक, ऋणात्मक (विकर्षण) घटक और तटस्थ घटक उपस्थित रहते हैं । यदि गन्तव्य स्थल में धनात्मक घटक अधिक और उद्‌गम स्थल पर ऋणात्मक घटक अधिक होते है तो प्रवास के अनुकूल परिस्थितियाँ बनती है । मध्यस्थ बाधाओं में भौतिक, आर्थिक, शिक्षा प्रणाली अथवा कानूनी बधाऐं हो सकती हैं । मध्यस्थ बाधाऐं छोटी-बड़ी भी हो सकती है । मध्यस्थ बाधाएं बड़ी अथवा कठिन होने पर प्रवास बीच में ही स्थिति हो सकता है । अथवा दिशा बदल सकती है । ली ने प्रवास सिद्धान्त को निम्न चित्र द्‌वारा प्रगट किया है -

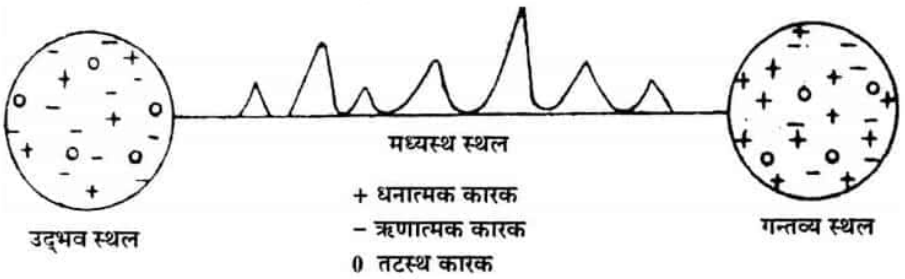


**चित्र- 11.4 : ई एस ली. का स्थानान्तरण सिद्धान्त**

ली ने अपने सिद्धान्त में निम्न लक्षण दर्शाए-

प्रवसन सभी दशाओं में चयनात्मक होता है । विशिष्ट आयुवर्ग के कुशल लोग प्रवास पर अधिक जाते हैं और अकुशलों में गतिशीलता कम होती है । चयन बहुधा द्‌विबहुलक (Bl - model) होता है । कुछ प्रवासी गंतव्य स्थल पर धनात्मक कारक अधिक होने पर बेहतर अवसर की तलाश में प्रवास करते हैं किन्तु उद्‌गम स्थल पर ऋणात्मक कारक प्रभावी होने पर प्रवासी का



Scanned with CamScanner

अपना कोई चुनाव नहीं होता, उसकी बाध्यता होती है । धनात्मक चयन मध्यवर्ती बाधाओं की कठिनाई के अनुरूप बढ़ती है । वस्तुतः प्रवासियों की विशेषता में उद्‌गम और गंतव्य दोनों स्थानों के और जनसंख्या के गुणों का मिश्रण पाया जाता है ।

### 11.8.4 जेलिंस्की का गतिशील संक्रमण मॉडल (Mobility Transition Modal)

जेलिंस्की ने प्रवास के प्रारूपों को जनांकिकी संक्रमण की विभिन्न अवस्थाओं से जोड़ कर अपना मॉडल प्रस्तुत किया है । उनकी धारणा है कि ग्रामीण कृषि प्रधान, अशिक्षित और अनेक संक्रामक बीमारियों से ग्रस्त समाज में भौतिक तथा सामाजिक गतिशीलता सीमित होती है । ज्यो-ज्यों यह समाज जनांकिकी संक्रमण की क्रमिक अवस्थाओं से गुजरता है प्रवास की दर उच्च होती जाती है । एक उद्‌योग प्रधान, नगरीय और शिक्षित समाज में गतिशीलता उच्चतम होती है । प्रवास सदैव देशकाल की चेतना से संबंधित रहता है । इसलिए आधुनिकरण ज्यो-ज्यों आगे बढ़ता है । विभिन्न प्रकार के प्रवास और संचार का प्रवाह भी बढ़ता जाता है ।

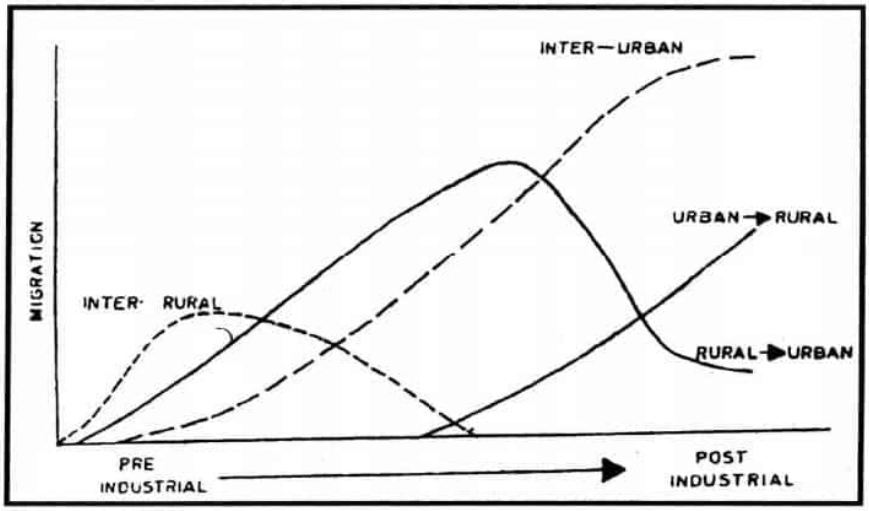


**चित्र - 11.5 : Mobility Transition Model**

जेलिंस्की (Zelinsky) के अनुसार विभिन्न अवस्थाओं में प्रवास की गति, स्वरूप और दिशा अलग - अलग होती है । ग्रामीण समाज में गतिशीलता सीमित होती है । गांव से गांव की ओर प्रवास अधिक किन्तु सीमित दूरियों तक होते है । इस अवस्था में यातायात के साधन कम और धीमी गति वाले होते है । दूसरी अवस्था में ग्रामीण क्षेत्रों से नगरीय तथा नए विकसित क्षेत्रों की ओर प्रवसन अधिक होता हैं । जनसंख्या वृद्धि के साथ आर्थिक सुअवसर भी बढ़ते हैं फलत : अंतर्राष्ट्रीय प्रवसन भी होते हैं तीसरी अवस्था मे इनकी गति धीमी होती है किन्तु चौथी अवस्था मे अंतर नगरीय और (inter- urban)तथा अंतरा-नगरी (intra-urban) प्रभाव अधिक होते हैं । कुशल व्यापारियों, वैज्ञानिकों, कुशल श्रमिकों का अतर नगरीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय प्रवसन अधिक होते हैं ।



Scanned with CamScanner